

2301000103033013

EXAMINATION FEBRUARY-MARCH 2024

BACHELOR OF ARTS(SECOND YEAR) (THIRD SEMESTER )

SANSKRIT - VI - LEVEL 3-KAVYASHASTRAM

(MAMMTACHARYAKRUT KAVYAPRAKASH)

उल्लास १.१० एवं नियत छन्दासि

[Time: As Per Schedule]

[Max. Marks: 50 ]

**Instructions:**

1. Fill up strictly the following details on your answer book

a. Name of the Examination : **BACHELOR OF ARTS(SECOND YEAR) (THIRD SEMESTER )**

b. Name of the Subject : **SANSKRIT - VI - LEVEL 3 - KAVYASHASTRAM ( MAMMTACHARYAKRUT KAVYAPRAKASH ) उल्लास १.१० एवं नियत छन्दासि**

c. Subject Code No : **2301000103033013**

2. Sketch neat and labelled diagram wherever necessary.

3. Figures to the right indicate full marks of the question.

4. All questions are compulsory.

Seat No:

--	--	--	--	--	--

Student's Signature

Q.1 नीयेना प्रश्नोना टूंकमां जवाब लखो ( कोठ पण पांय )

10

१) मम्मट क्वा प्रदेशनां निवासी हता, तेषो क्वां विधाभ्यास कर्षो हतो?

२) काव्यनां प्रयोजनो केटवा छे, अने क्वा क्वा?

३) काव्यप्रकाशना प्रथम उल्लासनुं नाम आपो?

४) उपमा अलंकारना केटवा प्रकारो छे ,?

५) ससंदेह अलंकारना केटवा प्रकारो छे, क्वा क्वा ?

६) ननमयय ; क्वां छंदनुं बंधारण छे, अक्षरो केटवा?

७) 'गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु गुरुदेवो महेश्वरः ।

गुरुसाक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः' ।। श्लोकनो छंद ओगप्पी बंधारण लप्पो?

**Q.2 (अ) नीयेना वाक्योनुं विवरण करो (गमे ते ब्ये)**

**8**

१) तादृशी ब्रह्मणो निर्मितं निर्माणम् । एतद्विलक्षणा तु कविवाङ्मनिर्मिति ।

२) अताद्रशि गुणिभूत व्यङ्ग्य व्यङ्ग्ये तु मदयमम् ।

३) तद्रूपकमभेदो च उपमानोपमेययोः

४) विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फ़लावचः ।

**(ब) नीयेका आपेला छंदो बंधारण तथा उदाहरण सडित समजावो .  
(गमे ते अेक)**

**5**

१) इन्द्रवज्रा

२) वंशस्थ

**Q.3 मम्मटे दशाविला काव्यनां डेतुओनी यर्या करो ?**

**13**

**अथवा**

**टूकनोध लप्पो.**

१) मम्मटनुं ञुवन

२) उत्तमकाव्य

Q.4 (अ) नीचे आपेवा अलंकार, लक्षाण तथा उदाहरण सहित समझावो 4  
(गमे ते अेक)

१) रूपक

२) समासोक्ति

Q.4 (ब) नीचेना अलंकार-युगभोमांथी कोठ पण अेकनो साम्यलेद दशावो. 6

१) उत्प्रेक्षा-श्लेष

२) अपह्नुति: -विभावना

(क) नीचे आपेवा श्लोको अलंकार ओणपी समझावो. (गमे ते अेक) 4

१) कर्पूर इव दग्धोडपि शक्तिमान यो जने जने ।

नमोडस्तेत्ववार्यवीर्याय तस्मै मकरकेतवे ॥

२) इन्दुः कि क्व कलडकः सरसिजमेतत्किमम्बु कुत्र गतम् ।

ललितसविलासवचनै मुखमिति हरिणाक्षि निच्चितंपरतः ॥

\*\*\*\*\*